2

हमारे प्रोत्साहन का स्त्रोत

(1:1-4क)

इब्रानियों की पुस्तक का अध्ययन आरम्भ करते हुए मैंने सुझाव दिया था कि यह पुस्तक ''प्रोत्साहन की बात'' है। पुस्तक के आरम्भ में हमारा परिचय तुरन्त हमारे प्रोत्साहन के मुख्य स्त्रोत अर्थात यीशु मसीह से करवाया जाता है। आयतें 1 से 4 सचमुच में पवित्र शास्त्र का बड़ा खण्ड हैं। वे हमें बताती हैं कि यीशु हमारा प्रोत्साहन देने वाला है और वह उस स्त्रोत के होने के लिए कई प्रकार से योग्य है।

उसका पुत्रत्व (1:1, 2क)

पुस्तक का आरम्भ यह कहते हुए होता है, ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हमसे *अपने* पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है'' (आयतें 1, 2क)। राजा (यीशु) की शान और यह तथ्य कि उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है, इब्रानियों की पुस्तक के पहले भाग का विषय है। यीशु के पुत्र होने पर ज़ोर दिया गया है। 2:9 से पहले पुत्र का उपयुक्त नाम नहीं दिया गया है। हमारे वचन पाठ में केवल इतना ही ज़ोर दिया गया है कि वह एक पुत्र यानी पुत्र के पद और शान वाला है।

उसका महत्व (1:2ख, 3)

आयत 2 और आयत 3 का शेष भाग पुत्र की सात विशेषताएं बताते हैं। ये विशेषताएं यीशु के महत्व अर्थात उसकी महानता को प्रकाशमान करती हैं।

वारिस: ''जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया'' (आयत 2ख)। यीशु पुत्र है इस कारण उसका वारिस होना सही है।

सृष्टि का रचने वाला: ''... उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है'' (आयत 2ग)। अनुवादित शब्द ''सृष्टि'' ''युगों'' के लिए शब्द है, जिसका यहां पर इस्तेमाल पूरे अन्तरिक्ष और समय के लिए वैश्विक अर्थ में किया गया है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु के पास सब वस्तुओं को रचने के लिए परमेश्वर की सामर्थ थी (देखें यूहन्ना 1:3; कुलुस्सियों 1:16)।

परमेश्वर की महिमा का प्रतिबिम्ब: ''वह उसकी महिमा का प्रकाश है'' (इब्रानियों 1:3क)। पुराने नियम में परमेश्वर की महिमा से तम्बू भर गया (देखें निर्गमन 40:34-38); उसकी महिमा उसका अपना ही प्रतिबिम्ब थी। नये नियम में यीशु ने परमेश्वर की महिमा को प्रकाशमान किया। जैसे सूर्य की किरणों को सूर्य से अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही यीशु को उसके पिता से अलग नहीं किया जा सकता।

परमेश्वर की छाप: ''और उसके तत्व की छाप है'' (आयत 3ख)। ''तत्व'' यहां उसके लिए इस्तेमाल हुआ है जिससे परमेश्वर बनता है यानी स्वयं परमेश्वर। इस वाक्यांश का अर्थ ''परमेश्वर के अपने तत्व का हूबहू प्रतिनिधित्व है।'' यीशु संसार में हमें केवल परमेश्वर का *वचन* देने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर का *स्वभाव* हम पर प्रकट करने के लिए आया (यूहन्ना 14:9)। इन सात विवरणात्मक वाक्यांशों में इस्तेमाल की गई शब्दावली केवल उसके लिए ही इस्तेमाल की जा सकती है, जो स्वयं परमेश्वर है।

संसार को बनाए रखने वाला: ''... और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन [अर्थात, अपने सामर्थी वचन] से सम्भालता है (इब्रानियों 1:3ग)। कुलुस्सियों 1:17 यह घोषणा करता है कि यीशु संसार को सम्भाले रखता है। यह आयत घोषणा करती है कि वह इसे अगुआई देने के साथ-साथ इसे सम्भालता भी है।

छुड़ाने वाला: ''वह पापों को धोकर'' (इब्रानियों 1:3घ)। यीशु के याजकाई के काम का परिचय यहां यीशु के हमारे पाप बली बनने के विचार के साथ दिया गया है। सृष्टिकर्त्ता के रूप में यीशु की *सामर्थ* और उद्धारकर्त्ता के रूप में उसके *दुख उठाने* की अवधारणाओं को जोड़ने पर यह दिखाने के लिए कि दोनों विचार एक-दूसरे के साथ बेमेल नहीं हैं, आधार बनता है।

सिंहासन पर विराजमान: ''वह ... ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा'' (आयत 3ङ)। यह कथन यीशु के स्वर्ग में उठाए जाने और राज्य अभिषेक की बात करता है। ''दाहिना हाथ'' आदर और सामर्थ दोनों का प्रतीक है। हमारा प्रभु यीशु कितना महान है!

उसकी श्रेष्ठता (1:4क)

आयत 4 पिछली आयत से आरम्भ हुए वाक्य को खत्म करती है: ''... स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।'' अगले पाठ में हम यीशु की स्वर्गदूतों से श्रेष्ठता पर बात करेंगे; पर इस पाठ में मैं ''उत्तम'' शब्द पर ज़ोर देना चाहता हूं। ''उत्तम'' इब्रानियों की पुस्तक का मुख्य शब्द है। इब्रानियों 1:4 में यीशु को स्वर्गदूतों से उत्तम घोषित किया गया है। अगले पाठों में हम जानेंगे कि मसीहियत के पास एक उत्तम वाचा, उत्तम बलिदान, उत्तम प्रतिज्ञाएं, उत्तम आशा आदि हैं (देखें 1:4; 7:19, 22; 8:6; 9:23; 10:34; 11:16, 35, 40; 12:24)। NIV में 1:4 में ''उत्तम'' की जगह ''श्रेष्ठ'' शब्द है: ''... स्वर्गदूतों से उतना ही श्रेष्ठ ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।''

यीशु हमारे प्रोत्साहन का स्रोत है। वह अपने पुत्रत्व, अपने महत्व और अपनी श्रेष्ठता के कारण वह स्रोत होने के योग्य है।

सिखाने वाले के लिए नोट्स

स्वामी, सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता

सात वाक्यांशों को देखते हुए व्यक्ति उन्हें *संसार से यीशु के सम्बन्ध* के विवरणों के रूप में सोच सकता है: (1) वैश्विक संसार, (2) संसार के लोग, या (3) संसार में लोग जो उसके हैं (मसीही)।

अगली सूची में हर पंक्ति पर चर्चा करते हुए आप क्लास के लोगों से पूछ सकते हैं कि इसमें किस ''संसार'' (1, 2 या 3) की बात है। कई बार प्रश्न के उत्तर एक से अधिक हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में संसार के ''स्वामी'' और ''सृष्टिकर्त्ता'' के रूप में यीशु की भूमिकाओं में मुख्यतया विवरण मिलता है (1), परन्तु (2) और (3) भी जोड़े जा सकते हैं। फिर, संसार के उद्धारकर्त्ता के सम्बन्ध में यीशु सब लोगों का उद्धारकर्त्ता हो सकता है (2), परन्तु वास्तव में वह उन्हीं लोगों का उद्धार करता है जो विश्वास और आज्ञापालन के द्वारा उसे स्वीकार करते हैं (3)।

- संसार का स्वामी
- संसार का सृष्टिकर्त्ता
- जगत की ज्योति
- जगत पर प्रकट करने वाला
- जगत को सम्भालने वाला
- जगत का उद्धारकर्त्ता
- जगत के लिए विनती करने वाला।[1]

मसीह (The Christ)

परमेश्वरत्व के दूसरे सदस्य के विवरणात्मक शीर्षकों को क्रम में लगाने का एक और ढंग यहूदी पृष्ठभूमि वाले लोगों की तरह पुत्र पर ख्रिस्तुस अर्थात मसीहा के रूप में विचार करना है जिसकी वे युगों से राह देख रहे थे। यीशु की विशेषताओं (और महत्व) पर बात करने के लिए इस अक्षरबन्द कविता का इस्तेमाल किया जा सकता है:

- **C**reator (सृष्टिकर्त्ता और सम्भालने वाला)
- **H**eir of all things (सब वस्तुओं का वारिस)
- **R**adiation of God's glory (परमेश्वर की महिमा का प्रकाश)
- **I**mage of God (परमेश्वर के तत्व की छाप)
- **S**avior (उद्धारकर्त्ता)
- **T**hrone-occupant (सिंहासन पर विराजमान)

अभिषिक्त

इब्रानी शब्द ''मसीहा'' और इसके यूनानी समानान्तर शब्द ''ख्रिस्तुस'' का अर्थ है ''अभिषिक्त।'' पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं, याजकों और राजाओं का अभिषेक किया जाता था। हमारे वचन पाठ में यीशु को अन्तिम प्रकाशन वाले भविष्यवक्ता (आयतें 1, 2क), अन्तिम बलिदान वाले याजक (आयत 3) और परमेश्वर के दाहिने हाथ राज करने वाले राजा (आयत 3) के रूप में दिखाया गया है।

टिप्पणी

[1]परमेश्वर के दाहिने हाथ, यीशु हमारे लिए विनती करता है (रोमियों 8:34; इब्रानियों 4:14-16)।